नए युग में शत्रु / मंगलेश डबराल

अंततः हमारा शत्रु भी एक नए युग में प्रवेश करता है
अपने जूतों कपड़ों और मोबाइलों के साथ
वह एक सदी का दरवाज़ा खटखटाता है
और उसके तहख़ाने में चला जाता है
जो इस सदी और सहस्त्राब्दी की ही तरह अज्ञात है
वह जीत कर आया है और जानता है कि अभी पूरी तरह नहीं जीता है
उसकी लड़ाइयाँ बची हुई हैं

हमारा शत्रु किसी एक जगह नहीं रहता
लेकिन हम जहाँ भी जाते हैं पता चलता है वह और कहीं रह रहा है
अपनी पहचान को उसने हर जगह घुला-मिला दिया है
जो लोग ऊँची जगहों में भव्य कुर्सियों पर बैठे हुए दिखते हैं
वे शत्रु नहीं सिर्फ़ उसके कारिंन्दे हैं
जिन्हें वह भर्ती करता रहता है ताकि हम उसे खोजने की कोशिश न करें
वह अपने को कम्प्यूटरों, टेलीविजनों, मोबाइलों
आइपैडों की जटिल आँतों के भीतर फैला देता है
किसी महँगी गाड़ी के भीतर उसकी छाया नज़र आती है
लेकिन वहाँ पहुँचने पर दिखता है वह वहाँ नहीं है
बल्कि किसी दूसरी और ज्यादा महंगी गाड़ी में बैठ कर चल दिया है
कभी लगता है वह किसी फ़ैशन परेड में शिरक़त कर रहा है
लेकिन वहाँ सिर्फ़ बनियानों और जाँघियों का ढेर दिखाई देता है
हम सोचते हैं शायद वह किसी ग़रीब के घर पर हमला करने चला गया है
लेकिन वह वहाँ से भी जा चुका है
और वहां एक परिवार अपनी ग़रीबी में से झाँकता हुआ टेलीविजन देख रहा है
जिस पर एक रंगीन कार्यक्रम आ रहा है

हमारे शत्रु के पास बहुत से फ़ोन नंबर हैं, ढेरों मोबाइल
वह लोगों को सूचना देता है आप जीत गए हैं
एक विशाल प्रतियोगिता में आपका नाम निकल आया है
आप बहुत सारा कर्ज़ ले सकते हैं बहुत-सा सामान ख़रीद सकते हैं
एक अकल्पनीय उपहार आपका इन्तज़ार कर रहा है
लेकिन पलट कर फ़ोन करने पर कुछ नहीं सुनाई देता

हमारा शत्रु कभी हमसे नहीं मिलता सामने नहीं आता
हमें ललकारता नहीं
हालाँकि उसके आने-जाने की आहट हमेशा बनी रहती है
कभी-कभी उसका संदेश आता है कि अब कहीं शत्रु नहीं है
हम सब एक दूसरे के मित्र हैं
आपसी मतभेद भुलाकर
आइए, हम एक ही थाली में खाएँ एक ही प्याले से पिएँ
वसुधैव कुटुम्बकम् हमारा विश्वास है
धन्यवाद और शुभरात्रि.

चौकीदार साहेब से अंतरंग बातचीत के मर्यादित अंश

विष्णु नागर

–क्या मैं देश के प्रधानमंत्री से बात कर रहा हूँ?

–नहीं। यह मुझे बदनाम करने की साजिश है। विपक्ष के नेता आज पाकिस्तान की भाषा में बात कर रहे हैं। यह बात मैं हरगिज बर्दाश्त नहीं कर सकता। कितनी बार कहूँ कि मैं देश का प्रधानमंत्री नहीं हूँ! क्या बालाकोट की तरह आपको इसका भी प्रमाण चाहिए ?यही आपकी देशभक्ति है? अरे मैं खुद कह रहा हूँ कि मैं नहीं हूँ तो नहीं हूँ!क्या मेरी भाषा ,मेरे तौरतरीकों से आपको जरा भी शक होता है कि मैं प्रधानमंत्री हूँ?तो फिर यह निराधार बात आप क्यों कर रहे हैं?क्या मेरी तरह आप भी शर्म को घोलकर पी गए हैं?

– क्षमा करें सर। मैं भूल गया था, आप तो दरअसल देश के प्रधानसेवक हैं।

– प्रधानसेवक नहीं। यह भी दंतकथा है।मैं प्रधानसेवक नहीं हूँ।

– आप गरीब माँ के बेटे तो होंगे ही!

–नहीं, वह भी नहीं हूँ।अब इसे रो-रोकर बताने जरूरत समाप्त हुई।जरूरत समाप्त तो अध्याय समाप्त।

–तो क्या मैं विष्णु के ग्यारहवें अवतार से बात कर रहा हूँ?

– क्या सारे गलत सवाल पूछने का ठेका आपने ले रखा है ?

–चलिए सही सवाल पर आता हूँ। क्या मैं भूतपूर्व चायवाले से बात कर रहा हूँ?

–नहीं,भाइयो-बहनो,कितनी बार बताऊँ कि अब मैं वह भी नहीं हूँ,बिलकुल नहीं हूँ। 2014 में मैंने चाय खूब बेची। इस तरह अपने को जीभरकर बेचा और जी भरकर कमाया भी।उसके बाद चाय बेचना और यहाँ तक कि चाय पर चर्चा करना भी मैंने बंद कर दिया है।चाय बेचने से नरेन्द्र मोदी का अब कोई संबंध नहीं है।वह कोई और नरेन्द्र मोदी था।

–तो फिर क्या मैं देश के पकौड़ा-प्रमोटर से बात कर रहा हूँ?

–पकौड़ा- प्रमोशन से भी मैं अब अपने आपको अलग कर चुका हूँ।पकौड़ों को इससे अधिक प्रमोशन नहीं चाहिए। हाँ मैं दिल से अभी भी पेटीएम और जिओ का प्रमोटर हूँ मगर आज जब देश की सुरक्षा खतरे में है, मैंने ऐन चुनावी मौसम में एंटी सैटेलाइट मिसाइल छुड़वाई है, तब पकौड़ा- प्रमोशन की याद दिलाना भी देशद्रोह है।आपको मालूम है कि आप इस आरोप में अंदर किए जा सकते हैं? फिलहाल आपकी जानकारी के लिए मैं सिर्फ़ और सिर्फ़, केवल और केवल, चौकीदार हूँ-चौकीदार, चौकीदार, चौकीदार।

–वह चौकीदार,जिसे राहुल गाँधी कहते हैं-चौकीदार चोर है।

–हाँ हूँ तो वही मगर यह बात मैं अपनी जुबान से नहीं कह सकता!इसलिए मैंने सारे चोरों को चौकीदार की दीक्षा दे दी है।मेरी पार्टी के एक नेता ने मुझे %ठग% भी कहा है-गुजरात का ठग।वैसे उस बेचारे ने भी गलत नहीं कहा मगर यह पार्टी अनुशासन के विरुद्ध है, इसलिए उस पर कार्रवाई की गई है।सच बोलना वैसे भी हमारी अपनीवाली चौकीदार- संस्कृति में अपराध है।

–अच्छा आप जैसे चौकीदारों का काम क्या है?

–सुना होगा आपने कि चौकीदार का काम है, चोर से कहना कि तू चोरी कर और चौकीदार के भरोसे सोनेवालों से कहना कि जागते रहो।वही मेरी ड्यूटी है,मेरा कर्तव्य है।

–अच्छा सच्चे हृदय से आप किसके चौकीदार हैं,ऐसा चौकीदार जो चोर से चोरी करने के लिए तो कहता है मगर दिनभर के थकेहारे नींद में बेखबर सो रहे लोगों से जागते रहने के लिए नहीं कहता?

–आप सच सुनना चाहते हैं? तो सुनिए। देखिए चौकीदार की जरूरत गरीब को तो होती नहीं,जिनको होती है,उनका चौकीदार मैं हूँ और सच्चे-पवित्र हृदय से हूँ।अधिक स्पष्ट शब्दों में सुनना चाहें तो मैं अडानी, अंबानी, नीरव मोदी, मेहुल भाई, विजय मलैया आदि का वफादार चौकीदार हूँ।अमित शाह और आनंदीबेन पटेल जैसे मित्रों -सहयोगियों का भी विश्वस्त चौकीदार हूँ।वैसे जुबान से गरीबों का हूँ मगर आप जानते हैं,जुबान चलाने में गाँठ का कुछ नहीं जाता लेकिन अपनी और अपनों की आमदनी तगड़ी हो जाती है।जैसे जुबान से मैंने हर हिंदुस्तानी को करीब पाँच साल पहले ही पंद्रह -पंद्रह लाख रुपये दे दिए थे। अच्छे दिन भी ला के उनके सामने धर दिए थे।है कोई माई का लाल, जो इससे इनकार कर सकेमुझमें यह क्वालिटी है कि मेरी जुबान की पहुँच दिल तक नहीं है और दिल की पहुँच,जुबान तक नहीं है।इन दोनों डिपार्टमेंटों का आपस में मैंने कोई संबंध नहीं होने दिया है। ये मुझे पैरेलल सर्विस प्रोवाइड करते हैं। यही मेरी सफलता का असली राज है।

–आँकड़े बताते हैं कि आपकी चौकीदारी में बेरोजगारी, गरीबी बेहद बढ़ी है, दलितों और मुसलमानों पर अत्याचार बढ़े हैं।उन्हें जलाने- मारने की घटनाएँ इतनी अधिक हुई हैं कि सारे विश्व में आपने भारत का नाम रोशन कर दिया है।

– इस सराहना के लिए आपका धन्यवाद।वैसे मैंने आँकड़ों के उत्पादन के सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में कई कारखाने और फैक्ट्रियाँ खुलवा रखी हैं,उनमें श्रेष्ठ किस्म का उत्पादन होता है।उसके उत्पादित आंकड़े यह नहीं बताते मगर थोड़ी देर के लिए मान लो, आपकी बात सही है तो चौकीदार का काम चौकीदारी करना है- बेरोजगारी दूर करना, दलितों-मुसलमानों पर अत्याचार रोकना नहीं है। खेद है कि आपको इतनी- सी बात मालूम नहीं।आखिर चौकीदार भी मनुष्य है।उसके कंधे पर आप इतना बोझ नहीं डाल सकते।और यह भी बता दूँ कि मैं कोई ढाई हजार रुपये वेतन पर काम करनेवाला चौकीदार नहीं हूँ,जिसे चार- चार महीने तक तनख्वाह नहीं मिलती, जो इसके लिए धरने -प्रदर्शन पर बैठता है और पुलिस के डंडे खाता है,हाथ -पाँव तुड़वाता है।मैं अलग प्रजाति का चौकीदार हूँ,मेरे कंधों पर मेरे मालिक स्वेच्छा से अधिक बोझ नहीं डालते हैं बल्कि मुझे ही कहना पड़ता है कि मालिक मेरे कंधे मजबूत हैं और बोझ डालो।वे मेरा निवेदन ठुकराते नहीं।मेरे मालिक कृपालु भजमन टाइप हैं।

–अच्छा आखिरी सवाल।चौकीदार जब चोर हो जाता है तो उसे क्या कहते हैं?

मुस्कुराते हुए- उसे नरेन्द्र मोदी के अलावा और क्या कह सकते हैं!

–कुछ अलग सा मगर सचमुच का आखिरी सवाल।आपको सबसे अधिक क्या पसंद है?

–अपने भाषण का एक-एक शब्द,अपने चेहरे के एक-एक भाव,हर विज्ञापन में अपना ही फोटो और दस लाख का वह सूट भी,जो हाय अब मेरा नहीं रहा। इतना कहकर चौकीदार जी ने अपनी पीठ थपथपाई और साथ ही खुजाई भी। एक पंथ दो काज की कहावत सोदाहरण चरितार्थ करने के उपरांत उन्होंने मुझसे विदा ली।